

Namaze Janaza Ka Tariqa (Gujarati)



નમાઝે જનાઝા કા તરીકા (હ-નફી)



સૌંદર્ય તરીકત, અમીરે અહલે સુલ્તાન, ડાનિયે દાંપતે ઇસ્લામી, હજારતે અલ્લામા મીરાજા અબુ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાઠિરી ર-મવી 

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नमाजे जनाजा का तरीका (१६-वर्क)

शैतान लाभ रोके येह रिसाला (23 सफ़हात)
मुकम्मल पढ लीजिये, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ, उस के
इवाँट छुट ही देख लेंगे.

दुइद शरीफ़ की इमीलत

रहमते आ-लमिय्यान, महुबूबे रहमान. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने न-र-कत निशान है : जो मुज पर अक बार दुइद शरीफ़ पढता है अद्लाह तआला उस के लिये अक कीरात अज लिखता है और कीरात उहुट पडास जितना है.

(مُصَنَّفُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ ج 1 ص 39 حديث 103)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वली के जनाजे में शिर्कत की न-र-कत

अक शप्स हजरते सय्यिदुना सरी स-कती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي के जनाजे में शरीक हुवा. रात को ज्वाब में हजरते सय्यिदुना सरी स-कती يَا 'نِي مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ؟ की जियारत हुई तो पूछा : عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अद्लाह उजल ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? जवाब दिया :

इरमाने मुस्तक़ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइडे पाक पढा अद्लाह उज पर दस रउमतें बेजता है. (स्म)

अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने मेरी और मेरे जनाजे में शरीक हो कर नमाजे जनाजा पढने वालों की मग़्फ़िरत इरमा दी. उस ने अर्ज की : या सय्यिदी मैं ने भी आप के जनाजे में शरीक हो कर नमाजे जनाजा पढी थी. तो आप ने अक इंडरिस निकाली मगर उस शप्स का नाम शामिल न था, जब गौर से देखा तो उस का नाम हाशिये पर मौजूद था. (तारिख دمشق لابن عساکر ج २० ص १९८)

अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रउमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

अकीदत मन्टों की भी मग़्फ़िरत

उजरते सय्यिदुना बिशरे हाकी اللهُ الْكَافِي को ईन्तिकाल के बा'द कासिम बिन मुनब्बेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّافِع ने प्वाब में देष कर पूछा : या'नी अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? जवाब दिया : अद्लाह عَزَّ وَजَلَّ ने मुजे बप्श दिया और ईशाद इरमाया : अै बिशर ! तुम को बल्के तुम्हारे जनाजे में जो जो शरीक हुअे उन को भी मैं ने बप्श दिया. तो मैं ने अर्ज की : या रब عَزَّ وَجَلَّ ! मुज से महब्बत करने वालों को भी बप्श दे. तो अद्लाह عَزَّ وَजَلَّ की रउमत मज़ीद जोश पर आई, और इरमाया : कियामत तक जो तुम से महब्बत करेगे उन सब को भी मैं ने बप्श दिया. (ايضاً ج १० ص २२०)

अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रउमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુરૂન)

આ'માલ ન દેખે યેહ દેખા, હૈ મેરે વલી કે દર કા ગદા

ખાલિક ને મુઝે યું બખ્શ દિયા, سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! અલ્લાહ વાલો رَحْمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى سے

નિસ્બત બાઈસે સઆદત, ઈન કા ઝિકે ખૈર બાઈસે નુઝૂલે રહમત, ઈન કી સોહબત દો જહાં કે લિયે બા બ-ર-કત, ઈન કે મઝારાત કી ઝિયારત તિરયાકે અમરાઝે મા'સિયત ઓર ઈન કી અકીદત ઝરીઅએ નજાતે આખિરત હૈ. رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام سے ભી ઓલિયાએ કિરામ અકીદત ઓર વલિયે કામિલ હઝરતે સચ્ચિદુના બિશરે હાફી ઓમિન بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ. ઈન કે સદકે હમારી ભી મગ્ફિરત ફરમા.

બિશરે હાફી સે હમેં તો પ્યાર હૈ

اِنْ شَاءَ اللَّهُ अपना बेडा पार है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

કફન ચોર

એક ઓરત કી નમાઝે જનાજા મેં એક કફન ચોર ભી શામિલ હો ગયા ઓર કબ્રિસ્તાન સાથ જા કર ઉસ ને કબ્ર કા પતા મહફૂઝ કર લિયા. જબ રાત હુઈ તો ઉસ ને કફન ચુરાને કે લિયે કબ્ર ખોદ ડાલી. યકાયક મહૂમા બોલ ઉઠી : سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ : એક મગ્ફૂર (યા'ની બખ્શિશ કા હકદાર) શપ્સ મગ્ફૂર (યા'ની બખ્શી હુઈ) ઓરત કા કફન ચુરાતા હૈ ! સુન, અલ્લાહ તઆલા ને મેરી ભી મગ્ફિરત કર દી ઓર ઉન તમામ

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदुइ पाक पढा उसे इयामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (अल-मुत्ताह)

क़ब्र में पहला तोहफ़ा

सरकारे नामदार, दौ आलम के मालिको मुफ़्तार, शह-शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से किसी ने पूछा : मोमिन जब क़ब्र में दाखिल होता है तो उस को सब से पहला तोहफ़ा क्या दिया जाता है ? तो एश्राफ़ फ़रमाया : उस की नमाजे जनाजा पढने वालों की मग़ि़रत कर दी जाती है. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٧ ص ٨ رقم ٩٢٠٧)

जन्मती का जनाजा

भीठे भीठे आका, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आफ़ि़यत निशान है : जब कोई जन्मती शप्स झैत हो जाता है, तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उया फ़रमाता है के उन लोगों को अजाअ दे ज़ो उस का जनाजा ले कर यले और ज़ो एस के पीछे यले और जिन्हों ने एस की नमाजे जनाजा अदा की. (أَلْفُ رَدُّوسُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ١ ص ٢٨٢ حَدِيثُ ١١٠٨)

जनाजे का साथ देने का सवाब

उज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे भुदा वन्दी عَزَّ وَجَلَّ में अर्ज की : या अल्लाह ! जिस ने महुज़ तेरी रिज़ा के लिये जनाजे का साथ दिया, उस की जज़ा क्या है ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया : जिस दिन वोह मरेगा तो इरिश्ते उस के जनाजे के हमराह यलेंगे और मैं उस की मग़ि़रत कइंगा. (شَرْحُ الصُّنُورِ ص ٩٧)

उहूद पहाड जितना सवाब

उज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के सरकारे मदीना, करारे कल्बो सीना, झैल गन्जना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा करीना है : ज़ो शप्स (एमान का तकाज़ा समज़ कर और हुसूले

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुःख शरीफ न पढा उस ने जफा की. (عبدالرزاق)

સવાબ કી નિચ્ચત સે) અપને ઘર સે જનાઝે કે સાથ ચલે, નમાઝે જનાઝા પઢે ઓર દફન હોને તક જનાઝે કે સાથ રહે ઉસ કે લિયે દો કીરાત સવાબ હૈ જિસ મેં સે હર કીરાત ઉહુદ (પહાડ) કે બરાબર હૈ ઓર જો શખ્સ સિફ જનાઝે કી નમાઝ પઢ કર વાપસ આ જાએ તો ઉસ કે લિયે એક કીરાત સવાબ હૈ.

(مسلم ص ૬૪૨ حدیث ૧૬૦)

નમાઝે જનાઝા બાઈસે ઇબ્રત હૈ

હઝરતે સચ્ચિદુના અબૂ ઝર ગિફારી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કા ઈશાદ હૈ : મુઝ સે સરકારે દો આલમ, નૂરે મુજસ્સમ, શાહે બની આદમ, રસૂલે મુહુતશમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : કબ્રોં કી ઝિયારત કરો તાકે આખિરત કી યાદ આએ ઓર મુદે કો નહલાઓ કે ફાની જિસ્મ (યા'ની મુદા જિસ્મ) કા છૂના બહુત બડી નસીહત હૈ ઓર નમાઝે જનાઝા પઢો તાકે યેહ તુમહેં ગમગીન કરે કયૂંકે ગમગીન ઈન્સાન અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કે સાએ મેં હોતા હૈ ઓર નેકી કા કામ કરતા હૈ.

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ۱ ص ۷۱۱ حدیث ۱۶۳۰)

મચ્ચિત કો નહલાને વગૈરા કી ફઝીલત

મૌલાએ કાએનાત, હઝરતે સચ્ચિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા શેરે ખુદા كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ સે રિવાયત હૈ કે સુલ્તાને દો જહાન, શહન્શાહે કૌનો મકાન, રહમતે આ-લમિય્યાન صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈશાદ ફરમાયા કે જો કિસી મચ્ચિત કો નહલાએ, કફન પહનાએ, ખુશબૂ લગાએ, જનાઝા ઉઠાએ, નમાઝ પઢે ઓર જો નાકિસ બાત નઝર આએ ઉસે ઘુપાએ વોહ અપને ગુનાહોં સે ઐસા પાક હો જાતા હૈ જૈસા જિસ દિન માં કે પેટ સે પૈદા હુવા થા.

(ابن ماجه ج ۲ ص ۲۰۱ حدیث ۱۶۶۲)

કરમાને મુસ્તકા : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (કબ્રાલ)

જનાઝા દેખ કર પઢને કા વિદ

હઝરતે સય્યિદુના માલિક બિન અનસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को भा'दें वफ़ात किसी ने ज्वाब में देખ कर पूछा : يَا نَبِيَّ اللهِ بَكَ : अल्लाह वफ़ात के साथ क्या सुलूक इरमाया ? कहा : अक कलिमे की वजह से बपश दिया जो हज़रते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जनाजे को देख कर कहा करते थे. (वोह कलिमा येह है :) سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوت (या'नी वोह ज़ात पाक है जो ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आयेगी) लिहाज़ा में भी जनाजा देख कर येही कहा करता था येह कलिमा कलने के सबब अल्लाह عزّ وجلّ ने मुझे बपश दिया. (احياء العلوم ج 5 ص 266 مخلصاً)

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ ने सभ से पहला

जनाजा किस का पढा ?

नमाजे जनाजा की इज्तिदा हज़रते सय्यिदुना आदम सकिय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के दौर से हुई है, इरिशतों ने सय्यिदुना आदम सकिय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के जनाजाओ मुबारका पर यार तकबीरें पढी थीं. इस्लाम में वुजूबे नमाजे जनाजा का हुकम मदीनअे मुनव्वरह शَرَفًا وَتَعْظِيمًا में नाज़िल हुवा. हज़रते सय्यिदुना अस्अद बिन जुरारह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का विसाले मुबारक हिजरत के भा'द नवें महीने के आबिर में हुवा और येह पडले सडाबी की मय्यित थी जिस पर नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ ने नमाजे जनाजा पढी. (भापूज अज इतावा र-उविख्या मुभर्रज, जि. 5, स. 375, 376)

करमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर दु़रेदे पाक की कसरत करो भेशक येड तुम्हारे लिये तछारत है. (अल-मुस्तफा)

नमाजे जनाजा इर्रे किफ़ाय़ा है

नमाजे जनाजा “इर्रे किफ़ाय़ा” है या’नी कोए अेक ली अददा कर ले तो सब बरिय्युञ्जिउम्मा हो गअे वरना जिन जिन को ढबेर पड़ोयी थी और नही आअे वोड सब गुनडगार डोंगे. ईस डे लिये जमाअत शरत नही अेक शप्स ली पड ले तो इर्र अददा हो गया. ईस की इर्रियत का ईन्कार कुइ है.

(भडारे शरीअत, जि. 1, स. 825, १२०, ३, ११२, इर्रुम्खतार ज ३, ११२)

नमाजे जनाजा में दो रुकन और तीन सुन्नते हैं

दो रुकन येड हैं : ﴿ 1 ﴾ थार बार “ اللهُ أَكْبَرُ” कडना

﴿ 2 ﴾ किया. (इर्रुम्खतार ज ३, १२६) ईस में तीन सुन्नते मुअककदा येड हैं :

﴿ 1 ﴾ सना ﴿ 2 ﴾ दु़रेद शरीफ़ ﴿ 3 ﴾ मय्यित डे लिये दुआ.

(भडारे शरीअत, जि. 1, स. 829)

नमाजे जनाजा का तरीका (ह-नई)

मुक्तदी ईस तरड नियत करे : “में नियत करता हूं ईस जनाजे की नमाज की वासिते अडलाड وَعَزَّ وَجَلَّ डे, दुआ ईस मय्यित डे लिये, पीछे ईस ईमाम डे” (इतायी तारख़ाये ज २, १०३) अब ईमाम व मुक्तदी पडले कानों तक डाय उठाओं और “ اللهُ أَكْبَرُ” कडते हुअे डौरन डरुणे मा’मूल नाइ डे नीये बांध लें और सना पडें. ईस में “وَتَعَالَى جَدُّكَ” डे आ’द “وَجَلَّ مَنَّاكَ وَلَا إِلَهَ عِزُّكَ” पडें डिर डिगैर डाय उठाअे “ اللهُ أَكْبَرُ” कडें, डिर दु़रेदे ईब्राडीम पडें, डिर डिगैर डाय

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो के तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचे। (طبرانی)

उठाओ “الله أكبر” कहे और हुआ पढ़ें (ईमाम तकबीरें बुलन्द आवाज से कहे और मुक्तदी आदिस्ता. बाकी तमाम अजकार ईमाम व मुक्तदी सब आदिस्ता पढ़ें) हुआ के बाद फिर “الله أكبر” कहे और हाथ लटका दें फिर दोनों तरफ़ सलाम डैर दें. सलाम में मय्यित और फिरिशतों और हाजिरीने नमाज की नियत करे, उसी तरह जैसे और नमाजों के सलाम में नियत की जाती है यहां ईतनी बात ज़ियादा है के मय्यित की भी नियत करे.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 829, 835 भाषूजन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बालिग मर्द व औरत के जनाजे की हुआ

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا

ईलाही ! बज्श दे हमारे हर जिन्दा को और हमारे हर इत शूदा को और हमारे हर हाजिरी को और हमारे हर गाईब को और हमारे हर छोटे को

وَكَبِيرِنَا وَذَكَرِنَا وَأُنْتَنَا اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنْ فَاحِيهِ

और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औरत को. ईलाही ! तू हम में से जिस को जिन्दा रभे तो उस को ईस्लाम पर

عَلَى الْإِسْلَامِ ط وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنْ آخِرَتِهِ عَلَى الْإِيمَانِ ط

जिन्दा रभ और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे.

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج 1 ص 684 حديث 1366)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ وَآلِهِمْ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर इस भरतभा दुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाज़िल फरमाता है. (मुराद)

ના બાલિગ લડકે કી દુઆ

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرْطًا وَاجْعَلْهُ لَنَا اجْرًا

ઇલાહી ! ઇસ (લડકે) કો હમારે લિયે આગે પહોંચ કર સામાન કરને વાલા બના દે ઓર ઇસ કો હમારે લિયે અજ (કા મૂજિબ)

وَذُخْرًا وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَمُشَفَّعًا ط

ઓર વક્ત પર કામ આને વાલા બના દે ઓર ઇસ કો હમારી સિફારિશ કરને વાલા બના દે ઓર વોહ જિસ કી સિફારિશ મન્જૂર હો જાએ.

(کنز الدقائق ص ۵۲)

ના બાલિગા લડકી કી દુઆ

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرْطًا وَاجْعَلْهَا لَنَا اجْرًا

ઇલાહી ! ઇસ (લડકી) કો હમારે લિયે આગે પહોંચ કર સામાન કરને વાલી બના દે ઓર ઇસ કો હમારે લિયે અજ (કી મૂજિબ)

وَذُخْرًا وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَمُشَفَّعَةً ط

ઓર વક્ત પર કામ આને વાલી બના દે ઓર ઇસ કો હમારે લિયે સિફારિશ કરને વાલી બના દે ઓર વોહ જિસ કી સિફારિશ મન્જૂર હો જાએ.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (त्रिभूषिण)

જૂતે પર ખડે હો કર જનાઝા પઢના

જૂતા પહન કર અગર નમાઝે જનાઝા પઢેં તો જૂતે ઓર ઝમીન દોનોં કા પાક હોના ઝરૂરી હૈ ઓર જૂતા ઉતાર કર ઉસ પર ખડે હો કર પઢેં તો જૂતે કે તલે ઓર ઝમીન કા પાક હોના ઝરૂરી નહીં. મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن એક સુવાલ કે જવાબ મેં ઈશાર્દિ ફરમાતે હેં :

“અગર વોહ જગહ પેશાબ વગૈરા સે નાપાક થી યા જિન કે જૂતોં કે તલે નાપાક થે ઓર ઈસ હાલત મેં જૂતા પહને હુએ નમાઝ પઢી ઉન કી નમાઝ ન હુઈ, એહતિયાત યેહી હૈ કે જૂતા ઉતાર કર ઉસ પર પાઉ રખ કર નમાઝ પઢી જાએ કે ઝમીન યા તલા અગર નાપાક હો તો નમાઝ મેં ખલલ ન આએ.”

(ફતાવા ર-ઝવિયા મુબર્રજા, જિ. 9, સ. 188)

ગાઈબાના નમાઝે જનાઝા નહીં હો સકતી

મચ્ચિત કા સામને હોના ઝરૂરી હૈ, ગાઈબાના નમાઝે જનાઝા નહીં હો સકતી. મુસ્તહબ યેહ હૈ કે ઈમામ મચ્ચિત કે સીને કે સામને ખડા હો.

(دُرِّمُخْتَار ج ۳ ص ۱۲۳ ۱۳۶)

ચન્દ જનાઝોં કી ઇકઠી નમાઝ કા તરીકા

ચન્દ જનાઝે એક સાથ ભી પઢે જા સકતે હેં, ઈસ મેં ઈખ્તિયાર હૈ કે સબ કો આગે પીછે રખેં યા'ની સબ કા સીના ઈમામ કે સામને હો યા કિતાર બન્દ. યા'ની એક કે પાઉ કી સીધ મેં દૂસરે કા સિરહાના ઓર

﴿رَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रदे पाक न पढे. (एम)

दूसरे के पाउं की सीध में तीसरे का सिरछाना وَعَلَىٰ هَٰذَا الْقِيَاسِ (या'नी एसी पर क्रियास कीजिये). (बछारे शरीअत, जि. 1, स. 839, 160ص عالمگیری ج)

जनाजे में कितनी सड़ें हों ?

बेअतर येह है के जनाजे में तीन सड़ें हों के उदीसे पाक में है :

“जिस की नमाज (जनाजा) तीन सड़ों ने पढी उस की मगि़रत हो जायेगी.”

अगर कुल सात ही आदमी हों तो अेक एमाम बन जाये अब पहली सड़ में तीन पडे हो जाअें दूसरी में दो और तीसरी में अेक. (غُنَيْهِ ص ०८८) जनाजे में पिछली सड़ तमाम सड़ों से अड़जल है. (نُزْمُخْتَار ج ३ ص १३१)

जनाजे की पूरी जमाअत न मिले तो ?

मरबूक (या'नी जिस की आ'ज तकभीरें झैत हो गएँ वोह) अपनी बाकी तकभीरें एमाम के सलाम डेरने के आ'द कहे और अगर येह अन्देशा हो के हुआ वगैरा पढेगा तो पूरी करने से कबल लोग जनाजे को कन्धे तक उठा लेंगे तो सिई तकभीरें कल ले हुआ वगैरा छोड दे. यौथी तकभीर के आ'द जो शप्स आया तो जब तक एमाम ने सलाम नहीं डेरा शामिल हो जाये और एमाम के सलाम के आ'द तीन बार “اللَّهُ أَكْبَرُ” कहे. डिर सलाम डेर दे. (نُزْمُخْتَار ج ३ ص १३६)

पागल या भुदकुशी वाले का जनाजा

जो पैदाएशी पागल हो या आलिय होने से पहले पागल हो गया हो और एसी पागल पन में मौत वाकेअ हुए तो उस की नमाजे

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरद पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क्रमान)

जनाजा में ना बालिग की दुआ पढ़ेंगे. (जोहरे ص १३८، غنيه ص ०८७) जिस ने भुदकुशी की उस की नमाजे जनाजा पढी जायेगी. (दुम्खतार ج ३ ص १२७)

मुर्दा बय्ये के अहकाम

मुसल्मान का बय्या जिन्दा पैदा हुवा या'नी अक्सर हिस्सा बाहर होने के वक्त जिन्दा था फिर मर गया तो उस को गुस्ल व कफ़न देंगे और उस की नमाज पढ़ेंगे, वरना उसे वैसे ही नहला कर अक कपडे में लपेट कर दफ़न कर देंगे. इस के लिये सुन्नत के मुताबिक गुस्ल व कफ़न नहीं है और नमाज भी इस की नहीं पढी जायेगी. सर की तरफ़ से अक्सर की मिकदार सर से ले कर सीने तक है. लिहाजा अगर इस का सर बाहर हुवा था और थीपता था मगर सीने तक निकलने से पहले ही झौत हो गया तो उस की नमाज नहीं पढ़ेंगे. पाँउ की जानिब से अक्सर की मिकदार कमर तक है. बय्या जिन्दा पैदा हुवा या मुर्दा या कय्या गिर गया उस का नाम रखा जाये और वोह क्रियामत के दिन उठाया जायेगा.

(दुम्खतार و ردّ المحتار ج ३ ص १०२-१०६), (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 841)

जनाजे को कन्धा देने का सवाब

उदीसे पाक में है : “जो जनाजे को यालीस कदम ले कर यले उस के यालीस कभीरा गुनाह मिटा दिये जायेंगे.” नीज उदीस शरीफ़ में है : जो जनाजे के यारों पायों को कन्धा दे अल्लाह عزّ و جلّ उस की उत्मी (या'नी

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: صَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ: મુઝ પર દુરૂદ શરીફ પઢો અલ્લાહ ઈંગ્લેઝ તુમ પર રહમત ભેજેગા. (ابن سنی)

મુસ્તફિલ) મગ્ફિરત ફરમા દેગા.

(الْجَوْهَرَةُ النَّيِّرَةُ ص ۳۹، دُرِّمُخْتَار ج ۳ ص ۱۰۸-۱۰۹) બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 823)

જનાઝે કો કન્ધા દેને કા તરીકા

જનાઝે કો કન્ધા દેના ઈબાદત હૈ. સુન્નત યેહ હૈ કે યકે બા'દ દીગરે ચારોં પાયોં કો કન્ધા દે ઓર હર બાર દસ દસ કદમ ચલે. પૂરી સુન્નત યેહ હૈ કે પહલે સીધે સિરહાને કન્ધા દે ફિર સીધી પાઈતી (યા'ની સીધે પાઉ કી તરફ) ફિર ઉલટે સિરહાને ફિર ઉલટી પાઈતી ઓર દસ દસ કદમ ચલે તો કુલ ચાલીસ કદમ હુએ. (عالمگیری ج ۱ ص ۱۶۲) બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 822) બા'ઝ લોગ જનાઝે કે જુલૂસ મેં એ'લાન કરતે રહતે હૈં, દો દો કદમ ચલો ! ઉન કો ચાહિયે કે ઈસ તરહ એ'લાન કિયા કરેં :
“દસ દસ કદમ ચલો.”

બચ્ચે કા જનાઝા ઉઠાને કા તરીકા

છોટે બચ્ચે કે જનાઝે કો અગર એક શખ્સ હાથ પર ઉઠા કર લે ચલે તો હરજ નહીં ઓર યકે બા'દ દીગરે લોગ હાથોં હાથ લેતે રહેં. (عالمگیری ج ۱ ص ۱۶۲) ઓરતોં કો (બચ્ચા હો યા બડા કિસી કે ભી) જનાઝે કે સાથ જાના ના જાઈઝ વ મમ્નૂઅ હૈ.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 823, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200)

નમાઝે જનાઝા કે બા'દ વાપસી કે મસાઇલ

જો શખ્સ જનાઝે કે સાથ હો ઉસે બિગૈર નમાઝ પઢે વાપસ ન

﴿فرمانے میں﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्जरत है. (भा. 1/160)

डोना याहिये और नमाज के आ'द औलियाअे मय्यित (या'नी मरने वाले के सर परस्तों) से ँज्जत ले कर वापस डो सकता है और दईन के आ'द ँज्जत की डजत नहीं. (عالمگیری ج 1 ص 160)

क्या शोहर बीवी के जनाजे को कन्धा दे सकता है ?

शोहर अपनी बीवी के जनाजे को कन्धा भी दे सकता है, कध्र में भी उतार सकता है और मुंड भी देष सकता है. सिई गुस्व देने और बिवा डडल बदन को धूने की मुमा-न-अत है. औरत अपने शोहर को गुस्व दे सकती है. (बडारे शरीअत, जि. 1, स. 812, 813)

मुरतद की नमाजे जनाजा का हुकमे शर-ई

मुरतद और काइर के जनाजे का अेक डी हुकम है. मज्जब तण्डील कर के ँसाई (किस्येन) डोने वाले का जनाजा पढने वाले के डारे में किये गअे अेक सुवाल का जवाब देते हुअे सय्यिडी आ'ला डजरत, ँमामे अडले सुन्नत, मुजददे दीनो मिल्लत, डजरते अद्लामा मौलाना शाड ँमाम अडमद रजा षान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ इतावा र-जविथ्या जिद 9 सईडा 170 पर ँशाई इरमाते हैं : अगर ब सुभूते शर-ई साबित डो, के मय्यित “عِيَادًا بِاللَّهِ” (या'नी षुदा की पनाड) तण्डीले मज्जब कर के ँसाई (किस्येन) डो युका था तो बेशक उस के जनाजे की नमाज और मुसल्मानों की तरड ँस की तजडीजो तकईन सज डरामे कतई थी. قَالَ اللَّهُ تَعَالَى (अद्लाड तआला इरमाता है)

करमाने मुस्तकी : على الله تعالى غيبو الله وسلم : जो मुज पर अक दुइद शरीक पढता है अदलाह उस के लिये अक कीरात अज लिपता है और कीरात उदुद पहाड जितना है. (प. १०)

وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّتَّ

أَبْدًا وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۗ

(प. १०, التوبه: १६)

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज न पढना और न उस की कब्र पर जे डोना.

मगर नमाज पढने वाले अगर उस की नसरानिय्यत (या'नी क्रिस्येन डोने) पर मुत्तलअ न थे और बर बिनाअे एल्मे साबिक (या'नी पिछली मा'लूमात के सभब) उसे मुसल्मान समजते थे न उस की तजडीजो तकईन व नमाज तक उन के नजदीक उस शप्स का नसरानी (या'नी क्रिस्येन) डो जना साबित हुवा, तो एन अइआल में वोड अब भी मा'जूर व बे कुसूर हैं के जब उन की दानिस्त (या'नी मा'लूमात) में वोड मुसल्मान था, उन पर येड अइआल बजा लाने ब जो'मे भुद शरअन लाजिम थे, हां अगर येड भी उस की ईसाईय्यत से षबरदार थे फिर नमाज व तजडीजो तकईन के मुर-तकिब हुअे कत्अन सप्त गुनडगार और वबाले कबीरा में गिरिफ्तार हुअे, जब तक तौबा न करें नमाज उन के पीछे मकइड. मगर मुआ-म-लअे मुरतदीन फिर भी बरतना जार्ज नही के येड लोग भी एस गुनाह से काफिर न डोंगे. डमारी शर-अे मुतइडर सिराते मुस्तकीम है, ईफरातो तफरीत (या'नी डदे अे'तिदाल से बढाना घटाना) किसी बात में पसन्द नही इरमाती, अलबत्ता अगर साबित डो जअे के उन्डों ने उसे नसरानी ज्ञान कर न सिई ब वजडे डमाकत व जडालत किसी ग-रजे दुन्यवी की निय्यत से बडके भुद

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुरुइ पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अं०)

ईसे ७ वजहे नसरानिय्यत मुस्तहिके ता'जीम व काबिले तजहीजो तकईन व नमाजे जनाजा तसव्वुर किया तो बेशक जिस जिस का औसा भयाल होगा वोह सब भी काफ़िर व मुरतद हें और उन से वोही मुआ-मला भरतूना वाजिब ज़ो मुरतदीन से भरता ज़ाये.

(इतावा २-जविय्या)

अल्लाह तबा-२-क व तआला पारह 10 सू-रतुतौबह की आयत नम्बर 84 में ईशादि इरमाता है :

وَلَا تَصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهٖ إِنَّهُمْ

كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهٖ وَمَآ تَوَّأ

وَهُمْ فٰسِقُونَ ﴿٨٤﴾

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज न पढना और न उस की कब्र पर भडे होना बेशक वोह अल्लाह व रसूल से मुन्डिर हुअे और फ़िस्क (कुफ़) ही में भर गअे.

सदरुल अफ़जिल उजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद

नईमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي ईस आयत के तइत इरमाते हें : ईस आयत से साबित हुवा के काफ़िर के जनाजे की नमाज किसी हाल में ज़ाईज नहीं और काफ़िर की कब्र पर दफ़न व ज़ियारत के लिये भडे होना भी मन्नूअ है. (भजाईनुल ईरफ़ान, स. 376)

उजरते सय्यिदुना ज़ाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से

रिवायत है के सरदारे मक्कअे मुकर्रमा, सरकारे मदीनअे मुनव्वरह

﴿۱﴾ **फ़रमाने मुस्तक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार हुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रइमतें भेजता है. (مسلم)

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद ईरमाया : अगर वोह बीमार पड़ें तो पूछने न जाओ, मर जायें तो जनाजे में लाजिर न हो. (ابن ماجه ج ۱ ص ۷۰ حديث ۹۲)

“मदीना” के पांय हुइइ की निरबत से जनाजे के मु-तअत्विक पांय म-दनी इल

“इलां मेरी नमाज पढाये” ऐसी वसियत का हुइम

﴿1﴾ मय्यित ने वसियत की थी के मेरी नमाज इलां पढाये या मुजे इलां शप्स गुस्ल दे तो येह वसियत बातिल है या'नी ईस वसियत से (मरने वाले के) वली (या'नी सर परस्त) का हक जाता न रहेगा, हां वली को ईप्तियार है के जुद न पढाये उस से पढवा दे. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 837, وغيره ۱۶۳ عالمگیری ج ۱ ص ۱۶۳) अगर किसी मुत्तकी जुजुर्ग या आदिम के बारे में वसियत की हो तो वु-रसा को याहिये के ईस पर अमल करें.

एमाम मय्यित के सीने की सीध में षडा हो

﴿2﴾ मुस्तअब येह है के मय्यित के सीने के सामने ईमाम षडा हो और मय्यित से दूर न हो मय्यित ज्वाह मई हो या औरत बालिग हो या ना बालिग, येह उस वक्त है के अक ही मय्यित की नमाज पढानी हो और अगर यन्द हां तो अक के सीने के मुकाबिल (या'नी सामने) और करीब षडा हो. (دَرْمُخْتَارُو رَدَّ الْمُخْتَارِ ج ۳ ص ۱۳۴)

ફરમાને મુસ્તફા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્ત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખૂરૂન)

નમાઝે જનાઝા પઢે બિગૈર દફ્ન દિયા તો ?

﴿૩﴾ મચ્ચિત કો બિગૈર નમાઝ પઢે દફ્ન કર દિયા ઔર મિટ્ટી ભી દે દી ગઈ તો અબ ઉસ કી કબ્ર પર નમાઝ પઢે જબ તક ફટને કા ગુમાન ન હો, ઔર મિટ્ટી ન દી ગઈ હો તો નિકાલે ઔર નમાઝ પઢ કર દફ્ન કરે, ઔર કબ્ર પર નમાઝ પઢને મેં દિનોં કી કોઈ તા'દાદ મુકરર નહીં કે કિતને દિન તક પઢી જાએ કે યેહ મૌસિમ ઔર ઝમીન ઔર મચ્ચિત કે જિસ્મ વ મરઝ કે ઇખ્તિલાફ સે મુખ્તલિફ હૈ, ગરમી મેં જલ્દ ફટેગા ઔર જાડે (યા'ની સદી) મેં બ-દેર (યા'ની દેર મેં), તર (યા'ની ગીલી) યા શોર (યા'ની ખારી) ઝમીન મેં જલ્દ, ખુશ્ક ઔર ગૈરે શોર મેં બ-દેર, ફર્બા (યા'ની મોટા) જિસ્મ જલ્દ, લાગર (યા'ની દુબલા પતલા) દેર મેં.

(أيضاً ص ۱۶۶)

મકાન મેં દબે હુએ કી નમાઝે જનાઝા

﴿૪﴾ કૂંએ મેં ગિર કર મર ગયા યા ઉસ કે ઊપર મકાન ગિર પડા ઔર મુદ્દા નિકાલા ન જા સકા તો ઉસી જગહ ઉસ કી નમાઝ પઢે, ઔર દરિયા મેં ડૂબ ગયા ઔર નિકાલા ન જા સકા તો ઉસ કી નમાઝ નહીં હો સકતી કે મચ્ચિત કા મુસલ્લી (યા'ની નમાઝ પઢને વાલે) કે આગે હોના મા'લૂમ નહીં.

(رَدُّ الْمَحْتَارِ ج ۳ ص ۱۶۷)

નમાઝે જનાઝા મેં તા'દાદ બઢાને કે લિયે તાખીર

﴿૫﴾ જુમુઆ કે દિન કિસી કા ઇન્તિકાલ હુવા તો અગર જુમુઆ સે પહલે તજહીઝો તક્ફીન હો સકે તો પહલે હી કર લે, ઇસ ખયાલ સે રોક રખના કે જુમુઆ કે બા'દ મજમઅ ઝિયાદા હોગા મકરૂહ હૈ.

(બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 840, 173, رَدُّ الْمَحْتَارِ ج ۳ ص 173)

ફરમાને મુસ્તફા: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तउकी क वोह बढे अप्त हो गया. (उंन)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

બાલિગ કી નમાઝે જનાઝા સે કબલ

યેહ એ'લાન કીજિયે

મહૂમ કે અઝીઝ વ અહબાબ તવજજોહ ફરમાએ ! મહૂમ ને અગર ઝિન્દગી મેં કભી આપ કી દિલ આઝારી યા હક ત-લફી કી હો યા આપ કે મકરૂઝ હોં તો ઈન કો રિઝાએ ઈલાહી કે લિયે મુઆફ કર દીજિયે, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**, મહૂમ કા ભી ભલા હોગા ઓર આપ કો ભી સવાબ મિલેગા. નમાઝે જનાઝા કી નિયત ઓર ઈસ કા તરીકા ભી સુન લીજિયે. “મેં નિયત કરતા હૂં ઈસ જનાઝે કી નમાઝ કી, વાસિતે અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** કે, દુઆ ઈસ મયિત કે લિયે પીછે ઈસ ઈમામ કે.” અગર યેહ અલ્ફાઝ યાદ ન રહેં તો કોઈ હરજ નહીં, આપ કે દિલ મેં યેહ નિયત હોની ઝરૂરી હૈ કે “મેં ઈસ મયિત કી નમાઝે જનાઝા પઢ રહા હૂં” જબ ઈમામ સાહિબ “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” કહેં તો કાનોં તક હાથ ઉઠાને કે બા'દ “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” કહતે હુએ ફૌરન હસ્બે મા'મૂલ નાફ કે નીયે બાંધ લીજિયે ઓર સના પઢિયે. દૂસરી બાર ઈમામ સાહિબ “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” કહેં તો આપ બિગૈર હાથ ઉઠાએ “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” કહિયે, ફિર નમાઝ વાલા દુર્રદે ઈબ્રાહીમ પઢિયે. તીસરી બાર ઈમામ સાહિબ “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” કહેં તો આપ બિગૈર હાથ ઉઠાએ “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” કહિયે ઓર બાલિગ કે

इरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى غلبوا اليه وسلم : जिस ने मुज पर अके बार दुइडे पाक पढा अदलाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (س)

जनाजे की दुआ पढिये¹ जब चौथी बार एमाम साहिब “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” कहे तो आप “**اللَّهُ أَكْبَرُ**” कह कर दोनों हाथों को फोल कर लटका दीजिये और एमाम साहिब के साथ काँधे के मुताबिक सलाम फेर दीजिये.

गमे मदीना, बकीअ,
मस्जिद और बे
हिसाब जन्नतुल
फिरदौस में आका
के पड़ोस का तालिब



25 मुहर्मुल उराम 1435 सि.हि.
30-11-2013

अेक युप सो¹⁰⁰ सुभ

सवाब कमाने का म-दनी मौकअ

जनाजे के इन्तिजार में जहां लोग जम्अ हों वहां इस रिसाले से दर्स दे कर भूब सवाब कमाईये. नीज अपने मर्हूमिन के इसाले सवाब के लिये ऐसे मौकअ पर जनाजे के जुलूस में या ता'जियत के लिये जम्अ होने वालों में येह रिसाला तकसीम फरमाईये.

¹ : अगर ना बालिग या ना बालिगा का जनाजा हो तो उस की दुआ पढने का

अे'दान कीजिये.

فرمانے مستکما لله وسلم علیه و آله : جزا شاسه مولیٰ پر دوزخه پاک پکنا بل گواا وله جنانه کا رهاسل
(طرائق) بل گواا.

آنذومراج

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
مرکز المسلمت برکات رضا الہند	شرح الصدور	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن مجید
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	نثران العرفان
باب المدینہ کراچی	جوبہ	دارالمنہج بیروت	صحیح مسلم
سہیل اکیڈمی مرکز الاہلیاء لاجور	غنیہ	دارالمعرفہ بیروت	سنن ابن ماجہ
باب المدینہ کراچی	فتاویٰ تاتارخانویہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	مصنف عبدالرزاق
دارالفکر بیروت	فتاویٰ عالمگیری	دارالکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان
دارالمعرفہ بیروت	درمختار دردالختار	دارالفکر بیروت	تاریخ دمشق
باب المدینہ کراچی	کنز الدقائق	دارالمعرفہ بیروت	مستدرک
رضافاؤنڈیشن مرکز الاہلیاء لاجور	فتاویٰ رضویہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	الترغیب والترہیب
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ بیروت	القرص بما ثور الخطاب

نامہ ریسالہ : **نمازے جنانا کا तरीکا**
 پہلی بار : **جولائی 2014 ء۔ اپریل 1435 ھ۔**
 تا'ءءء : **20,000**

ناشر : **مک-ت-بٹول مہدینا**

م-ءنی ءلتیاء : کسی اور کو یہ ریسالہ ءاپنے کی ءجاءت نہی ہے۔

کتاب کے ہریءار مول-ت-بٹول ءے ءے

کتاب کی تبااءت مں مولیاں ہراہی ءے یا سءءاءت کم ءے یا باءنڈنگ مں آگے ہیءے ءے گءے ءے تو مک-ت-بٹول مہدینا سے رءء فرمائهے۔

﴿ફરમાને મુસ્તફા ﷺ﴾: ۞ صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : ۞ اِس شَہس کی ناک بآک آلاؤد ۛو جیس کے پاس مہرا لیک ۛو اور ۛو ۛو
﴿مُؤذ ۛر دُرُودِ پآک نہ ۛدے. (ۛۛ)﴾

ફેહરિસ

ઉન્વાન	ક્રમ્બંધ	ઉન્વાન	ક્રમ્બંધ
દુરુદ શરીફ કી ફઝીલત	1	ગાઈબાના નમાઝે જનાઝા નહીં ۛો સકતી	11
વલી કે જનાઝે મેં શિકત કી બ-ર-કત	1	ચન્દ જનાઝોં કી ઈકઢી નમાઝ કા તરીકા	11
અકીદત મન્દોં કી ભી મઙ્ફિરત	2	જનાઝે મેં કિતની સફેં ۛોં ?	12
કફન ચોર	3	જનાઝે કી પૂરી જમાઅત ન મિલે તો ?	12
તમામ શુ-રકાએ જનાઝા કી બખ્શિશ	4	પાગલ યા ખુદકુશી વાલે કા જનાઝા	12
કબ્ર મેં પહલા તોહફા	5	મુદ્દા બચ્ચે કે અહકામ	13
જન્નતી કા જનાઝા	5	જનાઝે કો કન્ધા દેને કા સવાબ	13
જનાઝે કા સાચ દેને કા સવાબ	5	જનાઝે કો કન્ધા દેને કા તરીકા	14
ઉહુદ પહાડ જિતના સવાબ	5	બચ્ચે કા જનાઝા ઉઠાને કા તરીકા	14
નમાઝે જનાઝા બાઈસે ઈબ્રત હૈ	6	નમાઝે જનાઝા કે બા'દ વાપસી કે મસાઈલ	14
મચ્ચિત કો નહલાને વઘૈરા કી ફઝીલત	6	કયા શોહર બીવી કે જનાઝે કો કન્ધા દે સકતા હૈ ?	15
જનાઝા દેખ કર પઢને કા વિદ	7	મુરતદ કી નમાઝે જનાઝા કા હુકમે શર-ઈ	15
સરકાર ﷺ ને સબ સે પહલા	7	જનાઝે કે મુ-તઅલ્લિક પાંચ મ-દની ફૂલ	18
જનાઝા કિસ કા પઢા ?		“કુલાં મેરી નમાઝ પઢાએ” એસી વસિચ્ચત કા હુકમ	18
નમાઝે જનાઝા ફઝોં કિફાયા હૈ	8	ઈમામ મચ્ચિત કે સીને કી સીધ મેં ખડા ۛો	18
નમાઝે જનાઝા મેં દો રકન ઔર તીન સુન્નતોં હૈં	8	નમાઝે જનાઝા પઢે બિઘૈર દફના દિયા તો ?	19
નમાઝે જનાઝા કા તરીકા (હ-નફી)	8	મકાન મેં દબે હુએ કી નમાઝે જનાઝા	19
બાલિગ મદ વ ઔરત કે જનાઝે કી દુઆ	9	નમાઝે જનાઝા મેં તા'દાદ બઢાને કે લિચે તાપીર	19
ના બાલિગ લડકે કી દુઆ	10	બાલિગ કી નમાઝે જનાઝા સે કબલ	20
ના બાલિગા લડકી કી દુઆ	10	યેહ એ'લાન કીજિચે	
જૂતે પર ખડે ۛો કર જનાઝા પઢના	11	મઆખિઝો મરાજેઅ	22

બાલિગ કી નમાઝે જનાઝા સે કબ્લ યેહ એ'લાન કીજિયે

મહૂમ કે અઝીઝ વ અહબાબ તવજજોહ ફરમાએ ! મહૂમ ને અગર ઝિન્દગી મેં કભી આપ કી દિલ આઝારી યા હક ત-લફી કી હો યા આપ કે મકરૂહ હો તો ઈન કો રિઝાએ ઈલાહી કે લિયે મુઆફ કર દીજિયે, **مَرْحُومٌ كَمَا تَمِي لَمَلَا لَوْ غَا وَوَأُورِ آفَا كُو تَمِي سَوَاب مِيلِغَا.** મહૂમ કા ભી ભલા હોગા ઔર આપ કો ભી સવાબ મિલેગા. નમાઝે જનાઝા કી નિયત ઔર ઈસ કા તરીકા ભી સુન લીજિયે. **“મેં નિયત કરતા હૂં ઈસ જનાઝે કી નમાઝ કી, વાસિતે અલ્લાહ **عَزَّوَجَلَّ** કે, દુઆ ઈસ મચ્ચિત કે લિયે પીછે ઈસ ઈમામ કે.”** અગર યેહ અલ્લાહ યાદ ન રહેં તો કોઈ હરજ નહીં, આપ કે દિલ મેં યેહ નિયત હોની ઝરૂરી હૈ કે **“મેં ઈસ મચ્ચિત કી નમાઝે જનાઝા પઢ રહા હૂં”** જબ ઈમામ સાહિબ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહેં તો કાનોં તક હાથ ઉઠાને કે બા'દ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહતે હુએ ફોરન હરબે મા'મૂલ નાફ કે નીચે બાંધ લીજિયે ઔર સના પઢિયે. દૂસરી બાર ઈમામ સાહિબ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહેં તો આપ બિગૈર હાથ ઉઠાએ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહિયે, ફિર નમાઝ વાલા દુરૂદે ઈબ્રાહીમ પઢિયે. તીસરી બાર ઈમામ સાહિબ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહેં તો આપ બિગૈર હાથ ઉઠાએ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહિયે, ઔર બાલિગ કે જનાઝે કી દુઆ પઢિયે¹ જબ ચોથી બાર ઈમામ સાહિબ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહેં તો આપ **“اللَّهُ أَكْبَرُ”** કહ કર દોનોં હાથોં કો ખોલ કર લટકા દીજિયે ઔર ઈમામ સાહિબ કે સાથ કાઈદે કે મુતાબિક સલામ ફેર દીજિયે.

1 : અગર ના બાલિગ યા ના બાલિગા કા જનાઝા હો તો ઉસ કી દુઆ પઢને કા એ'લાન કીજિયે.



મહ-ત-બતુલ મદીના

દા'વતે ઈસ્લામી

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા, અહમદાબાદ-1 ગુજરાત, ઇન્ડિયા
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net